National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 223-225
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सुस्मिता कोरोथ एडवना
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सेंट जोसेफ कॉलेज ऑफ कॉमर्स (स्वायत्त),
#163, ब्रिगेड रोड़, बेंगलुरु - 560025
कर्नाटक, भारत

Correspondence:
Dr. Susmitha Koroth Edavana
Assistant Professor,
Department of Hindi,
St. Joseph's College of Commerce (Autonomous)
#163, Brigade Road, Bengaluru-560025, Karnataka, India.

हिन्दी साहित्य और भाषाई विविधताः राष्ट्र के बहुभाषी स्वभाव की पहचान काव्य के भाषाई रूपांतरण का रहस्य

डॉ. सुस्मिता कोरोथ एडवना

मूल सार :

अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक ह, जिसमें इसके सिद्धांतों और उपयोगों पर गहन और शास्त्रीय चर्चा की जा सकती है। श्रेष्ठ अनुवादक की कठिन कार्य है, क्योंकि अशुद्ध अनुवाद न केवल साहित्यिक परंपराओं के बीच सेतु को तोड़ देता है, बल्कि मूल रचना की गहरी समझ को भी प्रभावित करता है। इसका कारण प्रायः लापरवाही, उतावली और भाष के प्रति सजगता का अभाव होता है। इसलिए अनुवादक की प्रथम जिम्मेदारी है कि वह गंभीर आत्मचिंतन, पूर्ण निष्ठा, मेहनत और संवेदनशीलता के साथ कार्य करे। अनुवादक केवल शब्दों का रूपांतरणकर्ता नहीं, बल्कि भाव, संदर्भ और कलात्मकता का सेतु भी है। इसीलिए उसे भाषाविद्, समाजशास्त्री, इतिहासबोध से संपन्न संपादक और संवेदनशील पाठक होना आवश्यक है। अनुवाद एक रचनात्मक प्रक्रिया है, जो केवल भाषा परिवर्तन नहीं, बल्कि साहित्यिक पुनर्सृजन भी है।

आमुख :

अनुवाद का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसके सिद्धांतों और उपयोगों पर बहुत विस्तार में बात की जा सकती है और विचारों का शास्त्रीय विवेचन किया जा सकता है। इसके लिए हमें उन कठिनाइयों को समझना है जिन्हें हर अच्छा अनुवादक पहचानना चाहता है। खराब अनुवादक कभी-कभी इन्हें पहचानता भी नहीं और अनुवाद किये चला जाता है। ऐसे अनुवादक के परिश्रम से न दो साहित्यें के बीच सेतु बंधता है, न ही साहित्य की समझ बनती है। पर खराब अनुवाद अक्सर हुआ करते हैं और प्रचलित हो जाया करते हैं। इसका कारण लापरवाही, जल्दबाज़ी और भाषा के प्रति आदर की कमी है। अनुवाद की गुणवत्ता सबसे पहले अनुवादक को ही जांचनी चाहिए और उसे प्रकाशित करने के पहले भरपूर आत्मालोचन करना चाहिए। जब अनुवादक अपने अनुवाद को प्रकाशित करना तय करें तो उसे विश्वास होना चाहिए कि उसने उतनी ईमानदारी से काम लिया है जितनी वह अपनी किसी मौलिक रचना के लिखने और प्रकाशित करने में लगाता है। इसके बाद का काम उनका है जो अनुवादक नहीं हैं, पाठक है। निःसंदेह ये पाठक समाज के सहृदय और मर्मज्ञ गुणग्राहक होने चाहिए। पर वह अनुवादक की चिंता नहीं है। अच्छे अनुवादक ने आत्मालोचन की मंज़िल से गुज़रते ही कम-से-कम एक सहृदय पाठक जुटा दिया होता है- अनुवादक स्वयं वह पाठक है। आशा करनी चाहिए कि सहृदक पाठक उसकी प्रतिभा तक पहुंचने को प्रेरित होंगे। साहित्य के अनुवाद में बहुत से साधन दरकार होते हैं पर एक उनमें जो सर्वोपरि है वह है उस भाषा का विशद ज्ञान जिसमें अनुवाद किया जा रहा है। और भी कई साधन ज़रूरी है। जिस भाषा से अनुवाद करना है उसका साहित्य और उसके लिखने वालों का इतिहास और भूगोल, जानना भी कम ज़रूरी नहीं।

अनुवाद प्रक्रिया :

कविता के अनुवाद के रहस्यों की बात करें तो, पहले भाषा की बात आती है। कतिवा की भाषा अन्य प्रकार की भाषा से बहुत भिन्न कही जा सकती है। केवल इसलिए नहीं कि उसमें छंद और अलंकार होता है। वास्तव में कविता भाषा के उस क्षेत्र को भेद कर अपने को व्यक्त करती है जो अकथ है। कविता संकेंतों से और बिंबों से वह काम कर ले जाती ह,ै जो शब्दों के द्वारा नहीं हो सकता। वह जो कुछ बताती है वह शब्दों की पकड़ से परे होता है, अर्थात् हर अच्छी कविता में किसी न किसी अंश में अनका अर्थ होता हैं इस अनकहे का अनुवाद कैसे किया जाये- यही अनुवादक का प्रश्न है। हम पाते हैं कि मानव मात्र के मन से उठने वाले भावों- दुःख, प्रेम और करुणा के अनुभवों, एक दूसरे से बस हल्का-सा अंतर होता हैं। शब्दों में उन्हें अलग-अलग पारिभाषित करना असंभव है। हम या तो उन्हें व्यापक अर्थ में कह पाते हैं या फिर प्रतीक अथवा रूपक के द्वारा बताना चाहते है। दोनों दशाओं में उनका बहुत कुछ अर्थ अव्यक्त रह जाता है। तो एक भाषा से दूसरी भाषा में लाने की कोशिश करने पर कविता का वह अकथ कैसा पकड़ा जा सकेंगा कि अनुवाद में भी अकथ बना रहे। कोई भाषा जिस पात्र में अनुवाद को ग्रहण करती है वह इतिहास, भूगोल और साहित्य की परंपराओं तथा जाने कितनी सहायक वस्तुं के मेल से आना होता है। मूल कविता के पात्र से भाषा को दूसरे पात्र में ढालना मौलिक प्रयोग नहीं हो सकता क्योंकि पात्रों का रूपक यह स्थानांतरण करते ही समाप्त होता है और एक नई प्रक्रिया काम करने लगती हैं। हम कह सकते हैं कि यह प्रक्रिया लगभग वही होती है जो रचना की प्रक्रिया होती है। कभी-कभी यह भी हो सकता है कि अनुवाद मूल से अच्छा हो और उसमें कविता अधिक हो। तब तो यह विचित्र स्थिति स्वीकार करनी होगी कि मूल कविता अपने भाषांतर को लांघकर अपने शेष तत्वों को लेकर दूसरी भाषा की काव्यात्मक उपलब्धि भी बन सकती है। ऐसी अनूदित रचना में मूल के भाषागत, सांस्कृतिक, छंदात्मक आदि तत्व गुंथे हुए होंगे जो परायी भाषा से इस तरह जोड़े जायेंगे जैसे पौधे अपने देश में उखड़कर विदेशों में अक्सर जाया करते हैं।

कविता के अनुवाद में यह रोपाई विशेष रूप से नाज़ुक काम बन जाती है। इसे ऐसे हाथों से होना चाहिए जिन्हें पौधे की जड़ की परवाह हो और उसके भीतर छिपे बीज की पहचान। अनुवादक यह कह कर हार मान सकता है कि यह पौधा अपनी जड़ से उखड़ने से सूख जायेगा इसलिए यह अनुवाद असंभव हैं पर यह अलग बात हैं। सच्चाई यह है कि कविता का हर अनुवाद परायी भाषा में जी सकता है बशर्ते कि अनुवादक के पास भाषा की एक खास तरह की समझ, सहानुूति, कल्पना और भावप्रवणता हो। अपने प्रयत्नों के अंत में जब वह अनुवाद प्रकाशित करे तो कलात्मक स्तर पर यह विश्वसनीय लगे। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुवादक के पास कुछ ऐसी सांस्कृतिक और संपादकीय योग्यताएं होनी चाहिए जो कवि के पास शायद नहीं हों, क्योंकि कवि की रचना प्रक्रिया दूसरी हैं। कवि कतिवा के आरंभ से ही नहीं जानता है कि अंत में कविता का रूप क्या होगा जब कि अनुवादक शुरु से ही जानता है कि क्या बनाना है और बनाने के रास्ते में उसके तमाम भटकाव, तमाम अनुसंधान सिर्फ एक संपादकीय प्रयत्न होते हैं। फिर भी कवि और अनुवादक के प्रयत्नों को अनुवाद के अंतिम रूप से अलग-अलग देखना संभव नहीं होना चाहिए- क्योंकि अंत में मूल अनुदित रूप से एकाकार हो चुका होता है- या हो चुका होना चाहिए। इस प्रक्रिया से मूल की जो भी क्षति होती है, वह अनुवाद के नये जीवन के लिए अनिवार्य है। पर यह क्षति कितनी और कैसी स्वीकार्य होगी इसके प्रतिमान बनाने की जिम्मेदारी अनुवादक पर ही रहेगी।

इस प्रसंग में शिल्प के पक्ष पर कुछ विशेष व्यावहारिक सुझाव देना ज़रूरी है। पर इसके पहले एक दृष्टांत को समझना होगा कि एक भाषा से दूसरी में सांस्कृतिक, सामाजिक और भाषाई संवेदना का स्थानांतरण किया जाएं और वह विश्वसनीय भी रहे और काव्यात्मक भी। ऐसी स्थिति में कविता का तुलनात्मक मूल्यांकन सिवाय अनुवाद के किसी तरीके से संभव नहीं हो सकता। ऐसा करने पर मूल कविता रचना विश्व की अन्य भाषाओं में अनूदित होकर पहुंच सकती है। भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद में इसी पद्धति को अपना सकते हैं। पहले संपादकों को भारतीय भाषाओं में लिखी गई मूल कविताओं को चुनना होगा। फिर अंग्रेज़ी के उन जाने-माने कवियों को चुनना होगा जिन्होंने इन कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया हो। उसके बाद श्रोत भाषा में अर्थात् हिन्दी में उसका अनुवाद कवि एवं अंग्रेज़ी अनुवाद की मदद से करना होगा। क्योंकि अंग्रेज़ी एवं हिन्दी के बीच इतना अपरिचय नहीं है जितना अन्य भारतीय भाषा एवं अंग्रेज़ी के बीच है। इसलिए उस प्रयोग को दोहराये बिना ही प्रयत्न किया गया है कि हिन्दी अनुवाद प्रामाणिक हो।

निष्कर्षः

अब किसी भाषा की कविता के हिन्दी अनुवाद में छंद योजना संबंधी कुछ व्यावहारिक प्रश्नों को लें। लय, संगीत, छंद और स्वराधात के समतुल्य अनुवाद का प्रयत्न जहाँ भाव और अभिप्राय को खांडित किये बिना संभव हो वहां अवश्य करना चाहिए। जहां इन पक्षों पर ध्यान देने की कोशिश में मूल के काव्य तत्व का क्षय होता हो वहां मूल तत्व की रक्षा प्रमाणिक माननी चाहिए। जहां इन तत्वो के अनुवाद में हिन्दी में इन तत्वों के समान्तर तत्व मिल सकते हों वहाँ हिन्दी कविता की प्रकृति की रक्षा करते हुए इन तत्वों को अनुवाद की वरीयता देनी चाहिए। परंतु हिन्दी कविता की प्रकृति अनुवाद पर हावी न होने पाए, यह सतर्कता भी बरतनी चाहिए। कुल मिला कर अनुवाद के लिए निर्णय के प्रतिमान वही होंगे जो कविता के

अनुवादक के लिए इस लेख के प्रथम अंश में बताये गये हैं। अर्थात् यह काम एक कवि का ही होगा, परंतु उस कवि को एक साथ भाषाविज्ञ, समाजशास्त्री, इतिहासज्ञ, कवि, संपादक और दूसरे साहित्य का मर्मज्ञ होना आवश्यक हैं।

1 अनुवादः अनुभूति और आत्माभिव्यक्ति- डॉ.करनजीत सिंह।

2 आधुनिक साहित्य का अनुवादः डॉ.सतीश भार्गव

3 हिन्दी में अनुदित उर्दू साहित्य- डॉ. सुधेश

4 रूसी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद- डॉ. एलेक्सांद्र सैंकेटिव

5 विदेशी विद्वानों की हिन्दी को देन- डॉ. गार्गी गुप्त, डॉ. ओमप्रकाश सिंहल, डॉ. तिलक राज वोहरा, श्रीमती संतोष खन्ना, डॉ. सतीश भार्गव, डॉ.पूरनचंद टंडन, संजीव ठाकुर तथा लता बंसल

6 राजभाषा के संदर्भ में अनुवाद के विविध आयाम - डॉ. नारायण दत्त पालीवाल

7 रचनात्मक सात्यि और पुनर्सृजन- डॉ. तनवीर अहमद अली

8 हिन्दी और बर्मी साहित्य के बीच आदान-प्रदान- श्री चंद्रप्रकाश प्रभाकर

9 बांगला और गुजराती साहित्य के बीच आदान प्रदान - डॉ. रणजीत कुमार साहा

10 हिन्दी में अनूदित विदेशी कविता- डॉ. दिविक रमेश

11 मशीनी अनुवाद- हिन्दी की कोशीय क्रियाओं का विश्लेषण- श्री विजय मल्होत्रा

12 हिन्दी में विदेशी कविता- श्री जगदीश चतुर्वेदी

13 चेक साहित्य में भारतीय साहित्य का अनुवाद- सुश्री लेंका दुफ्कोवा

14 पश्चिम में अनुवाद कला के मूल श्रोतः एक मूल्यांकन- डॉ. ललितमोहन बहुगुणा

15 हिन्दी में अनूदित जर्मन साहित्य- श्री महेश दत्त

16 शब्दावली निर्माण के नये आयाम- डॉ. सूरजभान सिंह

17 मेरी अनुवाद यात्रा- विदेशी कविता के संदर्भ मेंः श्री रमेश कौशिक

18 अनुवादक सर विलियम जोन्स- डॉ.ओ. पी.केजरीवाल

19 अनुवाद और समतुल्यता का प्रश्न- डॉ.मीरकासिमोव

20 अनुवाद में सृजनात्मक मौलिकता- डॉ.मासूमा आर. अली

21 अनुवाद और सृजनः कहानी के संदर्भ में- श्रीमती संतोषा खन्ना

22 साहित्यानुवाद की कलाः विदेशी साहित्य के अंग्रेज़ी अनुवाद- डॉ. अरुणा चक्रवर्ती

23 अनुवादक के दुःख एवं पीड़ाएँ - श्री आर.के. मूर्ति

24 भारतीय कविता का अनुवादः कुछ व्यावहारिक समस्याएँ- श्री शिव प्रकाश

25 हिन्दी के प्रतिष्ठित काव्यानुवाद- डॉ. सुधेशा

26 अंग्रेजी फ़िल्मों में उप शीर्षकः अनुवाद के संदर्भ में- डॉ. अरुणा प्रकाश

27 अनुवाद अध्ययन की दिशाएँ- प्रो.जी. गोपीनाथन

28 अनुवाद अध्ययन की विशिष्ट दिशाएँ – प्रो.जी. गोपीनाथन

29 अनुवाद की अनुवर्ती कार्यक्रमः मूल्यांकन एवं प्रचार- डॉ. विश्व-नाथ अय्यर, डॉ.अवधेश कुमार श्रीवास्तव

30 अनुवाद संबंधी वक्तव्य- प्रो.बी.वै. ललितांबा

31 आलोचनात्मक कृतियों में अनुवाद की रचना प्रक्रिया- डॉ. ओम प्रकाश शर्मा 'प्रकाश'